

- 63 क्रोधो मन्युः क्रुधा हृषा ॥ १९९ ॥ 18
- 64 क्रुत्कोपः प्रतिघो रोषो हृष्टो- ॥ २०० ॥ 28
- 65 त्साहः प्रगल्भता ॥ २०१ ॥ 38
- 66 अभियोगोद्यमौ प्रौढरुद्योगः कियदेतिका । 48
- 67 अधवसाय उर्जो ॥ २०२ ॥ 58
- 68 ऽथ वीर्यं सो ऽतिशयान्वितः ॥ ३०० ॥ 68
- 69 भयं भीर्भोतिरातङ्क आशङ्का साधसं दरः । 78
- 70 भिया च ॥ ३०१ ॥ 88
- 71 तच्चाहिभयं भूपतीनां स्वपक्षत्रम् ॥ ३०२ ॥ 98
- 72 अदृष्टं वद्वितोयादे- ॥ ३०३ ॥ 108
- 73 दृष्टं स्वपरचक्रत्रम् । 118
- 74 भयंकरं प्रतिभयं भीमं भीष्मं भयानकम् ॥ ३०४ ॥ 128
- 75 भीषणं भैरवं घोरं दारुणं च भयावहम् । 138
- 76 त्रुगुप्सा तु घृणा- ॥ ३०५ ॥ 148
- 77 य स्याद्विस्मयश्चित्रमद्भुतम् ॥ ३०६ ॥ 158
- 78 चोद्याश्चर्ये ॥ ३०७ ॥ 168
- 79 शमः शान्तिः शमथोपशमावपि । 178
- 80 तृष्णाक्षयः ॥ ३०८ ॥ 188

63. 64. Zorn (9 W.). — 65—67. Thatkraft (9 W.). — 68. Ge-
steigerte Thatkraft, Muth. — 69. 70. Furcht (8 W.). — 71. Die aus
Misstrauen gegen die Unterthanen entspringende Furcht der Könige. —
72. Unbegründete Furcht, wie z. B. vor Feuer und Wasser. — 73.
Gegründete Furcht vor Gefahren, die im eigenen oder fremden
Lande drohen. — 74. 75. Furcht erregend (10 W.). — 76. Tadel-
sucht (2 W.). — 77. 78. Staunen, Wunder (5 W.). — 79. 80. Ge-